शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

नरेन्द्रसिंह तोमर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सुरेश सरोठिया (शोधार्थी)
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मालवा क्षेत्र में बोली जानेवाली मालवी के प्रसिद्द कवि श्री नरेन्द्र सिंह तोमर का विशिष्ट स्थान है । स्वतन्त्रता आंदोलन में श्री तोमर जी ने ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी रचनाओं से आजादी का अलख जगाया। कुरीतियों को दूर करने का सन्देश दिया। उन्होंने अपनी रचनाओं में जीवन के सभी पहलुओं का स्पर्श किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में नरेन्द्र सिंह तोमर के मालवी कविता में अवदान को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

मालवा जिसके प्रथम दो अक्षरों से बनता है, 'माल' और 'ल' हटा देने से शब्द बनता है 'मावा' - मीठो-मीठो खाओ ने मीठो-मीठो बोलो, यही यहाँ के लोगों का गुण है। सहज और सरल ढ़ंग से शब्दों की बाजीगरी और भाषाई पाखण्ड से मीलों दूर सीधी सरल भाषा में स्वयम् को व्यक्त करने की कला को मालवावासियों से सीखें। मालवा के मनीषियों ने अब तक लोक परम्परा और लोक संस्कृति के लिये जो कुछ भी किया उन्हें प्रशस्ति भी मिली किन्तु यह भी सच है कि मालवी गीतों को गाँव-गाँव, जन-जन तक पहुँचाने का अनूठा कार्य केवल नरेन्द्रसिंह तोमर ने किया जो अद्वितीय है। उनके द्वारा बिछाई गई मधुर लोकगीतों की जाजम पर ही आज मालवी लोक गीत का सारा मजमा जमा है। उनसे ही प्रेरित होकर मालवी काव्य और लोकगीत का मंच प्रतिष्ठित हुआ उन्होंने अपने प्रभावी स्वर और सार्थक काव्य से मालवी की पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया। उन्होंने अपने काव्य में अंधविश्वास, छुआछूत, बालविवाह, और भ्रष्ट व्यवस्था का मुखरता से विरोध किया। उन्होंने 'गाँधी गीतावली' और फिर 'बढ़े चलो' रची। 'गाँधी गीतावली' के बारे में स्वयं श्री तोमरजी ने बताया कि "महात्मा गाँधी के निधन ने उन्हें बड़ा विचलित कर दिया। पहले तो वे खूब रोये। उसके बाद इन्दौर स्थित फूटीकोठी के एक कोने में योगदान को लेकर कविताओं की रचना की, जो बाद में गाँधी गीतावली नाम से प्रकाशित हुई।"

(अ)- व्यक्तित्व

श्री कन्हैयालाल जी के पुत्र नरेन्द्र सिंह तोमर का जन्म 4 मार्च 1923 को हुआ। उन्ही के शब्दों में दादी बताती थी कि मैं बहुत ही दुबला और कमजोर था। पिताजी से मामाजी ने कहा कि इसे मैं अपने पास रखकर इन्दौर में पढ़ाऊँगा, और दूसरे दिन ही मामा सायकल पर बिठाकर इन्दौर ले आये। सातवीं पास कर 8वीं कक्षा में मिडिल स्कूल में भर्ती हुवा। बालकृष्ण दादा के साथ कभी

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

आर्य समाज मल्हारगंज जाता वहाँ यज्ञ हवन होने के बाद विद्वानों के भाषण होते तो आग्रह करके बालकृष्ण दादा ने मुझसे कहा कि तोमर तू भी अपना भजन गा दे। मैंने वहाँ पहली बार इतने लोगों के सामने गाया था। सब लोगों ने बड़ी तरीफ की और जब भी आर्य समाज जाता मुझे गीत भजन सुनाना ही पड़ता, मेरा गला अच्छा था। सारे देश में राष्ट्रीय आन्दोलन प्रारंभ हो चुके थे, भगतसिंह को फांसी अंग्रेजो ने दी तो देश में एक भूचाल सा आ गया। रोज प्रभात फेरियाँ निकलती थी, मैं भी प्रभात फेरी में उन दिनों छपे राष्ट्रीय गीत गाता तो सब दोहराते थें। यह रोज का नियम बन गया था। श्री बालकृष्ण त्रिवेदी जिन्हें मैं दादा कहता था, उनके प्रोत्साहन से मैं इंदौर के माणिक चौक (आज का सुभाष चौक) में राष्ट्रीय सभाएँ होती मैं बालकृष्ण दादा के साथ वहाँ जाता। चुपचाप मंच के पास बालकृष्ण दादा जाकर सभा के संचालक को कह देते कि तोमर भी राष्ट्रीय कविता सुनायेगा। मैं कविता या कोई राष्ट्र गीत सुनाता तो लोगों को बहुत अच्छा लगता इस तरह मैं बिलकुल बिना झिझक के तब गीत सुनाता तो सब लोग तारीफ करते। मुझे भी अच्छा लगता। कुछ दिनों के बाद फिल्मी धुनों पर, खासकर प्रदीप जी के गीतों की धुनों पर राष्ट्रीय गीत लिखने लगा और उन्हें पहले तो दासाहब और उनकी मंडली को सुनाता वे सब मुझे प्रोत्साहन देते और मीटिंगों में जन सभाओं में जब गीत सुनाने लगा तो मैं प्रसिद्ध हो गया। सभा प्रारंभ होने के पहले और भाषणों के बाद भी गीत सुनाता। माणिक चौक की सभा में मुझे गीत सुनाते श्री एम.एल. सोजतिया (प्रभात किरण जी) ने सुना तो मुझे राष्ट्रीय गीत लिखने को खूब प्रोत्साहित किया। फिल्मी धुनों पर राष्ट्रीय गीत इतने प्रसिद्ध हो रहे थे कि लोग बड़े उत्साह से उन्हें बार-बार सुनाने का आग्रह करते थे। जितने भी राष्ट्र गीत लिखे वे सब श्री सोजतिया ने नईदुनियाँ प्रेस से ही जयहिंद गीतावली, आजाद हिंद गीतावली, गाँधी गीतावली, बढे चलो और लड़े चलो छपाकर सारे देश में जगह भेजे। अंडमान निकोबार से छूटकर श्री सावरकर जी पहली बार इन्दौर आये थे, मैंने उनकी जीवनी पढ़कर उनके लिये एक स्वागत गीत लिखा। वहाँ गीत समाप्त होने के बाद श्री सावरकर जी ने मुझे हृदय से लगा लिया। इन्दौर की सारी उपस्थित जनता ने मुझे खूब सराहा- जहाँ भी कवि सम्मेलन होते मुझे अवश्य बुलाते और मेरे गीत सुनकर इन्दौर की जनता ने मुझे बहुत मान दिया, और पूरा राष्ट्रीयता के रंग में रंग गया। कोई राष्ट्रीय नेता की सभा होती तो मुझे अवश्य बुलाकर राष्ट्रीय गीतों को सुनवाकर ही सभा प्रारंभ होती थी। नीमा परिवारों में मालवी बोली का प्रचलन होने से बहने आग्रह करती कि खड़ी बोली में तुम राष्ट्रगीत लिखते हो तो मालवी में भी हमें राष्ट्र गीत लिखो। तब मैंने शादी के समय गाये जाने वाले गीतों की धुन पर कई गीत मालवी में लिखे, जिन्हें बहने समूह में गाती रही, वे गीत उन दिनों बहुत प्रसिद्ध हुए।

सारा देश अंग्रेजो के अधीन तो था पर देश में 365 राजाओं की हुकूमत भी चल रही थी, उन दिनों देश को अंग्रेजो के चंगुल से आजाद कराने का आंदोलन कांग्रेस द्वारा चलाया जा रहा था, तो राजाओं के चंगुल से छुड़ाने का आंदोलन जनता द्वारा प्रजामंडल की स्थापना से शुरू हो चुका था। कार्यकर्ता टोलियों में मंच पर भाषण देने जाते तो आय.जी. तुंगारे उन्हें रोकते। इसके बाद भी जब भाषण दिया जाता तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया

जाता और महिदपुर जेल भेज देते थे। मैं भी पहली बार वहाँ गिरफ्तार हुआ तथा महिदपुर जेल भेज दिया गया। वहाँ श्री भँवरलाल जी भट्ट जो अच्छे कवि थे तथा और भी कई साथी वहाँ थे, जेल में भी हम लोग खूब गीत गाते थे। वहीं भट्ट जी और मैंने "मजा आयेगा जेल के जीवन में" गीत लिखा, जो बड़ा प्रसिद्ध हुआ। हम लोगों की गिरफ्तारी की खबर जब घर वालों को लगी तो पिताजी और घर वालों को बड़ी फिक्र हुई वे महिदपुर आये और जेल में मुझसे मुलाकात की। हम लोगों को बड़े आनन्द में देखा तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और वे खुश होकर घर गए। एक महीना जेल में रहे। बाद में शासन द्वारा हमें छोड़ दिया गया।

(ब) कृतित्व:

1.स्वतंत्र्यवीर सावरकर जी के प्रति स्वागत गीत:- नरेन्द्रसिंह तोमर एवं सावरकर जी घनिष्ट मित्र थे। भारत में अंग्रेजों के आगमन पर सम्पूर्ण भारत में अत्याचार अधिक बढ़ चुके थे। ऐसे समय में सम्पूर्ण समाज को जागृत करने के लिए प्रभात फेरियों में शामिल हो गए थे। तोमर जी खुद स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उन्होंने राष्ट्रीय गीतों के माध्यम से जन-जन में चेतना जागृत की थी।

वीरों के तुम ओ केहरी
स्वागत है स्वागत है नर-केसरी'
'हिन्दू चमन के हो तुम बागबाँ माता के प्यारे हो तुम नौजवाँ'
रहने वाले कहाँ के हैं रहते कहाँ
ऐसे जालिम का कर दो रवाँ कारवाँ
वीर! मृत्यु भी छूने को तुम से डरी स्वागत है स्वागत है नर-केसरी'

2.जय हिन्द गीतावली:- इसका पहला संस्करण अप्रैल 1946 में छपा था, इस संग्रह के गीतों में लोगों को घर-बार छोड़कर आजादी की लड़ाई में जूझने की प्रेरणा दी थी। तब, इनके जरिये राष्ट्र, धर्म, भाई-चारा, और जन-जागरण के पक्ष में तथा अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में कवि ने शंखनाद किया था। हमारे तमाम शहीदों-खासकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का गुणगान करते तोमर जी अघाते नहीं थे। उन्होंने कुर्बानी का वास्ता दे कर क्रान्ति गीत रचे। इन क्रान्ति गीतों की गूँज मालवा के गाँव-गाँव, गली गली में गुंजी थी। इनमें बहनों को घूंघट छोड़कर केसरिया बाना पहनकर और नौजवानों को सिर पर कफन बांधकर, अपनी आजादी के लिए तन-मन-धन लुटाकर, मैदान में उतर आने की हुँकार भरी थी। तब कवि का नारा था उत्सर्ग। मात्र तमन्ना थी कि दासता की बेड़ियाँ टूटें, आजाद भारत माँ की जय के गीत गूँजे, लाल किले पर यूनियन जेक की जगह प्यारा तिरंगा फहरे। तोमर जी के गीतों की तान खेत-खलिहानों, मजदूर-किसानों जमीदारों-जागीरदारों, बूढ़े-बच्चों और बहनो ने सुनी और वह मंदिरो के कलशों से टकराती, मस्जिदों की मीनारों को छूती जन-जन का लोकगीत बन गई थी। तोमर जी ने अपने इन मधुर गीतों से लोगों के देश की बेहाली से परिचित कराया।

नौजवान, नौजवान, क्रान्ति गीत गाये जा।
सो रहा है हिन्द आज, नींद से जगाये जा।

3 हार्टनशाही के अत्याचारों की एक दर्द भरी कहानी - इन्दौर में 23 मई 1947 को हार्टनशाही द्वारा किए गए जुल्म, कभी नहीं भूल सकेगा। 23 मई को 'उत्तरदायी शासन के विषय में प्रजामंडल द्वारा दिया गया एक साल का अल्टीमेटम पूरा हो गया था। इस दिन पूरी हड़ताल करने और

सब नागरिक सुभाष चौक में इकट्ठे हो जुलूस बनाकर, माणिकबाग चलकर श्रीमन्त के सामने अपनी माँगे रखें यह निर्णय लिया गया। 23 तारीख को सारे शहर ने हड़ताल कर दी और सुबह 7 बजे करीब एक लाख आदमी सुभाष चौक में एकत्रित हुए। 'हार्टन-शाही' अंग्रेज नहीं चाहते थे कि ये लोग श्रीमन्त से मिलें, और कुछ कहें। सभा और जुलूस पर पाबन्दी लगा दी गई। फिर भी जुलूस निकला। बहने भी तिरंगा लिये बढ़ रही थीं। माणिकबाग के रास्ते में "हार्टनशाही" के लोगों ने जुलूस रोक दिया और जनता के साथ ऐसा नीचतापूर्ण व्यवहार किया जिसे सुनकर आज का मानव और आने वाली पीढ़ी हमेशा धिक्कारती रहेगी।

4 गांधी गीतावली:-15 अगस्त 1948 में विश्ववंद्य बापू की अमर स्मृति में रचित रचना "गाँधी गीतावली" लिखी गयी थी। नरेन्द्रसिंह तोमर द्वारा भावावेश में लिखी गयी इस बार की कविताओं में एक मीठी वेदना का सम्मिश्रण है। मालूम होता है, बापू की याद में इस युवा कवि हृदय वीणा के टूटे हुए तार की तरह झनझना उठा है। इस संग्रह के सर्वश्रेष्ठ गीत 'बापू की बीन' को पढ़कर पाठकों का हृदय आनन्द विभोर हो उठता है। यह गीत सचमुच स्वतंत्र भारत का भाव चित्र है। इस गीत में कवि ने अपनी समस्त काव्य कला बापू की बीन पर मोहित होकर उनकी मधुर स्मृति को चिर अमर करने के लिए काव्य संसार को समर्पित करने का प्रयास किया हो, ऐसा लगता है।"2

अपने ही हाथ से, अपने ही बाप का खूँ बहाया,
गोडसे!.तूने क्या जुल्म ढ़ाया।।

5 बढे चलो- (दूसरा संस्करण 2002)- जैसा कि पुस्तक के सम्पादकीय में व्यक्त किया गया है, नरेन्द्रसिंह तोमर की पुस्तक बढ़े चलो का प्रथम संस्करण अंग्रेजी शासन ने जब्त कर लिया था। अब वह उपलब्ध नहीं है। उसका रंग रूप भी उपलब्ध नहीं है। इसके गीत 1942 से 1948 की अवधि में तोमर जी ने रचे थे। उनसे निवेदन करने पर उपलब्ध हुए हैं। बढ़े चलो के इन गीतों में कुछ गीत मालवी में भी रचे गये थे। बढ़े चलो के गीत, हमारी आजादी और लोक के प्रति तोमर जी के अनुराग के परिचायक हैं। राष्ट्रीय भावना के साथ-साथ इनमें सामाजिक बदलाव का आग्रह भी है। प्रण वीरों! फूट गुलामी से, लबरेस भरी मटकी फोड़ी।

जालिम के कड़े दिल दहल पड़े, जेलों की दीवारें तोड़ी।

अब है दिल्ली के लाल किले की बारी।"1

6 आजाद हिन्द गीतावली:- इसका प्रथम संस्करण 1 मार्च 1948 को प्रकाशित हुआ । इसके बारे में प्रभात किरण में लिखा गया कि तोमर जी ने "एक दम नई चीज" के माध्यम से संदेश दिया। नदेन्द्रसिंह तोमर की इस विलक्षण काव्य रचना में आप स्वतंत्र भारत का प्रखर प्रकाश देखेंगे। इसमें दो सौ वर्ष की गहन गुलामी की मुक्ति में बलिदान होने वाले अमर शहीदों की वीर गाथाओं का वर्णन किया गया है। यह स्वतंत्र भारत के 15 अगस्त महापर्व की अमर स्मृति बनकर रहेगी।2"

7 गीत गंगा (302 गीतों का संग्रह)- हिन्दी साहित्यिक वाचिक परम्परा में संतों के गीतों के महत्व को स्वीकारा गया है। 'गीत गंगा' में मालवी में गाये जाने वाले भक्ति गीतों का अद्भुत भण्डार है। दरअसल हमारे सगुणी और निर्गुणी संत लोक भावना के महान आराधक भी हैं। अपने आत्मचिन्तन और अनुभव से जो भी

उन्होंने रचा वह मानवीय गुणों की स्थापना के लिए ही रचा। श्री तोमर जी को सर्वाधिक ख्याति बाल विवाह पर आधारित उनकी कविता 'बाणी ने चल्या हो कइं लाड़ा' पर मिली। यह बाल-विवाह पर हास्य व्यंग्य से युक्त कविता है। इसमें सामाजिक चेतना का गहरा संदेश निहित है। इसकी एक बानगी देखिए:

बणी ने चल्या हो कइं लाड़ा
पेरी पाग पसेरी भर की
धोती घुना ऊफर सरकी
आंख को काजल पोंछाणा से
सकल बणी गई हे बंदर सी
छे अंगळ की जूती पेरी, मोजा में बांध्या नाड़ा।

8 **पगडण्डी**- मालवी साहित्य के पूरे इतिहास को यदि देखा जाय तो स्पष्ट होगा कि मालवा के जन-मन में लोग श्रृंगार के साथ ही राष्ट्रीय आन्दोलन की लोक लहर प्रसारित करने में शीर्ष स्वर नरेन्द्रसिंह तोमर का ही था। आजादी के पक्ष में लोक धुनों में उन्होंने सीधी-सादी गीत रचना की थी, जो मालवांचल की जबान पर वक्त का गान बन गई थी। तोमर जी के गीतों में आज भी ओछी राजनीति की छोंक नहीं है। उनमें परिपूर्ण राष्ट्रीय बोध है। प्रजामंडल के जमाने में जब कन्हैयालाल खादीवाला, रामेश्वर जी तोतला, लक्ष्मणसिंह चौहान, जोहरीलाल झांझरिया, दादा काशीनाथ त्रिवेदी, बैजनाथ महोदय, मिश्रीलाल गंगवाल जैसे मालवा के शीर्ष नेता राष्ट्रीय आंदोलन के लिए गाँव-गाँव जन-जागरण की सभाएँ आयोजित करते थे, तब लोगो को इकट्ठा करने के एकमात्र साधन होते थे मालवी और खडीबोली में नरेन्द्रसिंह तोमर के मीठे राष्ट्रीय गीत। लोग तोमर जी के रचे गीतों की धुन पर मोहित होते थे और इस बहाने जुट जाती थी सभाओं में भीड़। उनके द्वारा बिछाई गई मधुर लोकगीतों की जाजम पर ही आज तक मालवी लोक गीत का सारा मजमा जमा है। उनसे ही प्रेरित होकर मालवी काव्य और लोक गीत का मंच प्रतिष्ठित हुआ है।

बरसे बदरिया सावन में मेरा मन खुशी से प्रफुल्लित है, मीरा के गिरधर नागर के आगमन पर आनंद रूपी गीत गा रही हैं।

निष्कर्ष

प्राचीन काल से ही हिन्दी एवं मालवी गीत कवियों की परम्परा चली आ रही है, जिसमें अपने-अपने परिवेशों में साहित्य का सृजन किया और अपने-अपने लोक साहित्य को वर्तमान तक लाने का श्रेय मिलता है। मालवी लोक गीतों की संस्कृति सृष्टि अधिकांशत: कृषि संस्कृति और सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना पर आधारित गीतों के भावों को प्रस्तुत किया गया है। आजादी के लिए जेल यात्राएं की, प्रादेशिक, राष्ट्रीय मंचों पर, आकाशवाणी, विविध भारती, दूरदर्शन और कवि सम्मेलनों में प्रतिष्ठत हुए। बी.बी.सी. लन्दन से प्रसारित होने वाले मालवी के पहले लोक गीत प्रसारित हुए थे। तब से अब तक लोक मंचो पर प्रतिष्ठित, आकाशवाणी के बहुचर्चित गीतो की छांव में मालव का गाँव लोक संगीत रूपक के आयोजन में प्रमुख सहयोग रहा है। मालवी कवियों में नरेन्द्रसिंह तोमर जी का स्थान साक्षात्कारों के मतानुसार- बचपन से ही अपने पिता से प्रेरणा लेते हुए राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना जागृत करने में नरेन्द्रसिंह तोमर जी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आजादी और जन जागरण में एक लोक गायक के रूप में अपनी पहचान बनायी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.कुँ.नरेन्द्रसिंह तोमर: मेरी जीवन गाथा: हस्तलिखित लिपि प्राप्त, दि. 29/12/2010

2.कुँ.नरेन्द्रसिंह तोमर: 23 मई, 'हार्टनशाही के अत्याचारों की 'एक दर्द भरी कहानी', प्रका.उमरावलाल चौधरी, इन्दौर, 23 मई, 1947

3.कुँ.नरेन्द्रसिंह तोमर: जय हिन्द गीतावली, प्रका एम.एम. सोजतिया एण्ड कंपनी पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स इन्दौर, अप्रैल-1946

4.कुँ.नरेन्द्रसिंह तोमर: बढ़े चलो, प्रका. एम.एम. सोजतिया एण्ड कंपनी पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स इन्दौर, अप्रैल-1946 5. कुँ.नरेन्द्रसिंह तोमर: गांधी गीतावली, प्रका. एम.एम. सोजतिया एण्ड कंपनी पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स इन्दौर, 15 अगस्त,1948

6.कुँ.नरेन्द्रसिंह तोमर: आजाद हिंद गीतावली, प्रका.एम.एम. सोजतिया एण्ड कंपनी पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स इन्दौर, 15 अगस्त,1948

7.नरेन्द्रसिंह तोमर के गीत: सम्पा. नरहरि पटेल, द्वितीय संस्करण-2010

8.कुँ.नरेन्द्रसिंह तोमर: पगडंडी, सम्पा. नरहरि पटेल, द्वितीय संस्करण-2010

9.कुँ.नरेन्द्रसिंह तोमर: गीत गंगा, सम्पा. नरहरि पटेल, प्रका.श्री सद्गुरू प्रका.ग्राम पिवडाय तह.जिला इन्दौर, प्रथम संस्करण-2008

10 डॉ दिनेश प्रसाद: लोक साहित्य और संस्कृति

11 डॉ. कुन्दन लाल उप्रेती: लोक साहित्य के प्रतिमान

12 सूर्यनारायण व्यास मालव: मालव जनपद और क्षेत्र , उज्जैन

13 डॉ. श्याम परमार: भारतीय लोक साहित्य

14 डॉ दिलीप चौहान: मालवा के लोक गीत

15 डॉ. सच्चिदानंद तिवारी: आधुनिक कविता में गीत

16 श्री चन्द्रसिंह झाला: लेख - मालवा के किसानों का संगीत प्रेम